ध्यान यत्नसाध्य नहीं, सहजसाध्य है।

ध्यान करने का अभ्यास करने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि ध्यान तो हम निरन्तर करते ही हैं। पत्नी पति का और पति पत्नी का ध्यान रखते ही हैं। डॉक्टर मरीजों का, दुकानदार ग्राहकों का, यहाँ तक कि मजदूर अपने काम का ध्यान रखते ही हैं। यदि ड्राइवर गाड़ी चलाते समय ध्यान न रखे तो क्या होगा ह्न इसकी कल्पना की जा सकती है।

अरे, भाई ! ध्यान के बिना तो एक कप चाय भी नहीं बन सकती। यदि ध्यान नहीं रखा जायेगा तो चूले पर चढा दूध उबल सकता है, तवे पर पड़ी रोटी जल सकती है। कहाँ तक कहें ध्यान के बिना तो इस जगत में कोई भी काम नहीं होता। यही कारण है सभी लोग अपने-अपने काम का ध्यान रखते ही हैं। अत: सभी को ध्यान रखने का, ध्यान करने का अभ्यास तो है ही। आवश्यकता ध्यान के अभ्यास करने की नहीं, ध्येय को बदलने की है, निज आत्मरूप ध्येय को समझने की है।

ध्येय का निर्णय होने पर, उसमें अपनापन आ जाने पर, उसकी तीव्रतम रुचि जाग्रत हो जाने पर, उसे पाने की तड़प उत्पन्न हो जाने पर; उसका ध्यान तो सहज ही होता है, उस पर से ध्यान हटता ही नहीं है। इसीलिए तो कहा गया है कि ध्यान यत्नसाध्य नहीं, सहजसाध्य है।

– ध्यान का स्वरूप, पृष्ठ – १७

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 27 311 अंक : 11

सत्ता रंगभूमि में....

सत्ता रंगभूमि में, नटत ब्रह्म नटराय।। टेक ।।
रत्नत्रय आभूषण मण्डित, शोभा अगम अथाय।
सहज सखा नि:शंकादिक गुन, अतुल समाज बढ़ाय।।
सत्ता रंगभूमि में ....।।1 ।।
समता वीन मधुररस बोलै, ध्यान मृदंग बजाय।
नदत निर्जरा नाद अनूपम, नूपुर संवर ल्याय ।।
सत्ता रंगभूमि में....।।2 ।।
लय निज-रूप मगनता ल्यावत, नृत्य सुज्ञान कराय।
समरस गीतालापन पुनि जो, दुर्लभ जगमहँ आय।।
सत्ता रंगभूमि में....।।3 ।।
भागचंद आपहि रीझत तहाँ, परम समाधि लगाय।
तहाँ कृत-कृत्य सु होत मोक्षनिधि, अतुल इनामहिं पाय।।
सत्ता रंगभूमि में....।।4 ।।

ह्न कविवर पण्डित भागचन्दजी

छहढाला प्रवचन

अजीव और आस्रव के बारे में भूल

शुभ अशुभ बंध के फल मंझार, रति-अरति करै निजपद विसार।
आतमहित हेतु विराग-ज्ञान, ते लखैं आपको कष्टदान ।।६।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

अरे, अज्ञानी के सभी तत्त्वों में गलती है। वह बंधन में सुख मानता है, संवर में दुःख मानता है, अजीव को जीव मानता है, जीव को देहरूप मानता है ह्न ऐसी अत्यंत विपरीत मान्यता करता है। यह विपरीत मान्यता महा दुःखरूप है, उनसे छूटने के लिये यह उपदेश है।

जिनेन्द्र भगवान ने आठों ही कर्म के फल को विषवृक्ष का फल कहा है, उनमें से किसी भी शुभकर्म को बाकी नहीं रखा है। चैतन्यस्वरूप आत्मा अमृत की बेली है, उसके अनुभव में आनन्द का फल आता है और उसके विपरीत शुभ-अशुभ सभी भावों का फल विषरूप है। जिसे पुण्य की रुचि है, उसे जड़ की रुचि है, उसे आत्मा की रुचि नहीं है। प्रभो ! तू मुक्तस्वरूप आत्मा है, तेरा स्वभाव बन्धन से रहित है और तू उसको भूलकर बंध के प्रेम में फँस गया, यह तुझे शोभा नहीं देता। यह तो तेरे लिये दुःख है, कलंक है। बंधन में, कोई बन्धन अच्छा और कोई बुरा ह्न ऐसे दो भेद नहीं होते। एक भी बन्धन भला नहीं है; सर्व बन्धन से रहित मुक्ति ही भली है ह्न अच्छी है, उसमें ही सुख है।

प्रश्न : शुभ के फल में धर्म के निमित्त की सामग्री मिलती है तो उसको भला क्यों न माना जाये?

उत्तर : धर्म की दुर्लभता दिखाने के लिये धर्म के निमित्त को भी दुर्लभ कहा गया है; परन्तु वास्तव में तो वे शुभ-निमित्त भी आत्मा से भिन्न हैं, आत्मा से बाह्य हैं; मात्र निमित्त का संयोग मिलने से धर्म की प्राप्ति नहीं होती। जब तक संयोग की तरफ

देखता रहेगा, तबतक आत्मा को धर्म का लाभ नहीं होगा; जब संयोग से भिन्न निजस्वरूप की ओर देखेगा, तभी धर्म होगा। शुभ भी मेरे ज्ञान से भिन्न है ह्न ऐसा जाने बिना अन्तर्मुख कैसे होगा ? अरे, जो अपना स्वभाव नहीं है, जो अपने मोक्ष को रोकनेवाला है ह्न ऐसे शुभराग में उत्साह क्यों ? धर्मी को चैतन्य के अनुभव का उत्साह है, उसको राग या पुण्य का उत्साह नहीं ।

.)

कोई कहे कि 'आपको बड़ा पुण्यबन्ध हुआ' ह्न तो ज्ञानी कहते हैं कि अरे भाई ! हम तो चैतन्य हैं, उसमें बन्धन कैसा ? हम तो सभी बन्धन से छूटकर मुक्त होना चाहते हैं। बन्धन से हमारी शोभा नहीं है; शरम है। बन्धनभाव में हम नहीं हैं, उसमें हमारा उल्लास नहीं है; हम तो अपने वीतरागी ज्ञानरूप अबन्धभाव में हैं, उसी में हमारा उत्साह व प्रेम है।

भाई ! यदि तुम अपना हित चाहते हो तो एकबार ऐसी पहचान करो; बाहरी सब बात भूल जाओ और अपने निजस्वरूप को पहचानो। शुभ-पुण्य अच्छा और अशुभ-पाप बुरा; इसलिये उसके फलरूप अनुकूल सामग्री में सुख और प्रतिकूल सामग्री में दुःख ह्न ऐसी अज्ञानी की मान्यता होने से वह सर्वत्र राग-द्वेष करके दुःखी होता है; वीतरागी ज्ञान की शांति उसे कहीं भी नहीं मिलती; क्योंकि वह बन्धनरहित ज्ञानमय निजपद का सेवन नहीं करता और उसे नहीं पहिचानता । ज्ञानस्वरूप की पहिचान के लिये यह उपदेश है।

अनुकूल संयोग में जो सुख मानेगा, वह उसके कारणरूप शुभराग में भी सुख मानेगा, इसलिये उसे राग से रहित चैतन्यसुख का अनुभव नहीं होगा। संयोग से व राग से भिन्न निजपद को भूलना ही इस जीव की बड़ी भूल है। अरे ! संयोग में या राग में तुम्हें सुख लगता है; किन्तु वास्तव में उसमें सुख है ही नहीं। सुख तो वीतरागता में ही है, उसको तुमने कभी नहीं जाना। जिसने राग को या पुण्यबन्ध को अच्छा माना, उसको मोक्ष की श्रद्धा नहीं है। जिसको राग की रुचि है, उसको मोक्ष की रुचि नहीं। मोक्ष तो अतीन्द्रिय ज्ञानमय है; रागमय नहीं । ज्ञानस्वभाव की श्रद्धा जिसको नहीं है, उसको मोक्षादि सातों तत्त्वों की श्रद्धा में भूल है।

अपना हित किससे है ह्न इसका अज्ञानी को भान नहीं है और आत्मा के लिये दुःखरूप बन्धभाव कैसा है ? इसका भी उसको भान नहीं है। वह तो अहितरूप

बन्धभाव (शुभराग) को हितरूप समझकर उसका सेवन कर रहा है और अपने को परमहितरूप ऐसे वीतरागी श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र को कष्टरूप समझकर उनसे दूर भागता है। अरे, जीव दुःख को नहीं चाहते, किन्तु दुःख के कारणरूप मिथ्याभावों का दिन-रात सेवन करते हैं; सुख को चाहते हैं, किन्तु उसके कारणरूप वीतराग-विज्ञान का एक क्षण भी सेवन नहीं करते। यदि जीवादि नव पदार्थों का स्वरूप भले प्रकार पहचाने तो कौन अपने को हितरूप है और कौन अपने को अहितरूप है ह्न उसका ज्ञान होवे और तभी अहितकर भावों का सेवन छोड़कर हितरूप वीतराग-विज्ञान का सेवन करे।

हे भाई ! चार गति में जो अनन्त दुःख तुमने भोगे, उनसे यदि छूटना चाहते हो और मोक्षसुख का अनुभव करना चाहते तो मिथ्याश्रद्धा छोड़कर वीतराग-विज्ञान का सेवन करो। वाह ! दुःख से छूटना कौन नहीं चाहेगा? दुःख से छूटकर आनन्द की प्राप्ति का यह अवसर मिला है; अतः हे जीव ! तू प्रमादी मत होना।

मोह नींद में सोते जीव को जगाकर उसका निजपद दिखलाते हुए वीतरागी सन्त कहते हैं कि अरे जीव ! राग तेरा निजपद नहीं है, तेरा निजपद तो चैतन्यमय है ह्न ऐसे अपने निजपद को विसरकर पुण्य में प्रीति मत कर। शुभराग की प्रीति से तो संसार मिलता है; जिसकी प्रीति से संसार मिले उसको कौन मुमुक्षु अच्छा कहेगा? जो जीव पुण्य को चाहता है, उसको तो कुन्दकुन्दस्वामी ने समयसार में परमार्थ से बाह्य कहा है ह्न

परमार्थ से हैं बाह्य वे जो मोक्षमग नहीं जानते।
अज्ञान से भवगमन कारक पुण्य को हैं चाहते।।१५४।।

प्रश्न : तो क्या धर्मी को पुण्य नहीं होता ?

उत्तर : पुण्य हो भले, परन्तु धर्मी तो सर्व प्रसंग में अपने को ज्ञाता-दृष्टा स्वरूप ही जानते हैं, वह क्षणभर भी अपने निजपद को नहीं विसरते। पुण्य पुण्य में है, निजपद निजपद में है ह्न ऐसी दोनों की भिन्नता है। हर प्रसंग में धर्मी जानते हैं कि मैं ज्ञानदर्शनमय हूँ, वही मेरा निजपद है। जब निजपद को सम्हालता हुआ चैतन्य जागृत हुआ, तब कोई भी बाह्यसंयोग उसको रोकनेवाला नहीं; किसी की ताकत नहीं जो उसको रोके। राग से भिन्न चैतन्य के सम्यक् भान में शुभ या अशुभ कोई भी हलचल करने में समर्थ नहीं है। निजपद के अतिरिक्त अन्य कोई परपद (परभाव) अपना नहीं दिखता; धर्मी का ऐसा भेदज्ञान मोक्ष का कारण है। **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन

काल द्रव्य का स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 31 वीं गाथा की टीका में समागत 47 वे कलश पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। कलश मूलतः इसप्रकार है ह्न

(मालिनी)

समयनिमिषकाष्ठा सत्कलानाडिकाद्याद्
दिवसरजनिभेदाज्जायते काल एषः।
न च भवति फलं मे तेन कालेन किंचिद्
निजनिरूपमतत्त्वं शुद्धमेकं विहाय।।४७।।

(दोहा)

समय निमिष काष्ठा कला घड़ी आदि के भेद।
इनसे उपजे काल यह रंच नहीं सन्देह।।
पर इससे क्या लाभ है शुद्ध निरंजन एक।
अनुपम अद्भुत आतमा में ही रहूँ हमेश।।४७।।

समय, निमिष, काष्ठा, कला, घड़ी, दिनरात आदि भेदों से यह काल (व्यवहारकाल) उत्पन्न होता है; परन्तु शुद्ध एक निज निरुपम तत्त्व को छोड़कर, उस काल से मुझे कोई फल नहीं है।

आत्मा के ज्ञान बिना जीव अज्ञान के कारण अनादिकाल से रखड़ रहा है। मैं चिदानन्द हूँ, देव-शास्त्र-गुरु पर हैं, पर के साथ मेरा कोई संबंध नहीं ह्न यही वास्तव में प्रयोजनभूत है।

जिसप्रकार पानी का मूलस्वभाव तो शीतल है, वह अग्नि के निमित्त से स्वयं की योग्यता के कारण उष्ण होता है; उसीप्रकार आत्मा तो स्वभाव से शुद्ध ही है, निज निरुपम तत्त्व है, पुण्य-पाप आदि आकुलता के भाव उष्णता है। आत्मा तो शीतलीभूत त्रिकालीध्रुव एक ही है, वह पर का कर्त्ता-भोक्ता नहीं; अपितु ज्ञाता ही है। जिसप्रकार भगवान जानने-देखनेवाले हैं; उसीप्रकार मेरा आत्मा भी जानने-

देखनेवाला है। आत्मा के त्रिकाल शुद्ध स्वभाव में तो पर का कर्त्तापन एवं विकार है ही नहीं; किन्तु निर्मल पर्याय पर भी ज्ञानी की दृष्टि नहीं है। वे तो अपने को ज्ञानानन्द चैतन्यमूर्ति स्वरूप ही जानते हैं; अतः वे ही सच्चे जैनी हैं। आत्मा शुद्ध है, उसमें राग-द्वेष की अशुद्धता नहीं है।

आत्मा का स्वरूप चार प्रकार का कहा गया है ह्न

(१) यह आत्मा शुद्ध है अर्थात् पुण्य-पाप की अशुद्धता से रहित निर्मलानन्द ध्रुव है।

(२) एक है अर्थात् पर्याय की अनेकता नहीं है। अनेक प्रकार की तारतम्यता पर्याय में है, किन्तु ध्रुव त्रिकाली तत्त्व में तारतम्यता नहीं है।

(३) आत्मा निजतत्त्व है, देव-गुरु-शास्त्र निजतत्त्व नहीं है; अतः सर्वज्ञादि आत्मा को तिरा नहीं सकते। महाविदेहक्षेत्र में वर्तमान में साक्षात् तीर्थंकर विराजते हैं, किन्तु वे भगवान किसी को तिराते नहीं; आत्मा स्वयं पुरुषार्थपूर्वक संसार से तिरें तो उसे भगवान ने तिराया ह्न ऐसा कहा जाता है।

(४) आत्मा निरुपम तत्त्व है अर्थात् किसी भी परद्रव्य की उपमारहित है।

मेरा प्रयोजन तो मुझसे है, काल से कोई प्रयोजन नहीं ह्न ऐसा कहते हैं। यहाँ काल की व्याख्या चल रही है, उसमें यह बात कह रहे हैं कि काल से मेरा क्या प्रयोजन है? बीते काल में ये संयोग नहीं थे और भविष्यकाल में ये रहेंगे नहीं और बीते काल के संयोग वर्तमान में नहीं है; क्योंकि संयोग तो पराधीन है। आत्मा अनादि-अनंत है, वह तीनों काल पर से रहित है। आत्मा तो एक है, जो आत्मा से भिन्न हो, वह आत्मा का नहीं है। पूर्वभव में भगवान मिलें हो तो वे अब नहीं रहे; अतः वे भगवान भी तेरे नहीं हैं। संयोगी कोई वस्तु तुम्हारी नहीं। पुण्य-पाप के भाव भी छूटनेवाले हैं; अतः वे भी तुम्हारे नहीं है। आत्मा तो त्रिकालीध्रुव चिदानन्द है, इसमें श्रद्धा-ज्ञान और रमणता करना धर्म है।

आत्मा जन्म-मरण नहीं करता। सूर्य-चन्द्र का जिसप्रकार नाश नहीं होता; उसीप्रकार आत्मा का भी नाश नहीं होता। सूर्य-चन्द्र उदय और अस्त होते हैं, यह बात तो इस अपेक्षा से कही जाती है कि जब वे दिखाई देते हैं तो उदय और दिखाई नहीं देते तब अस्त हैं। जिसप्रकार प्रातः हो या रात्रि सूर्य जमीन से आठ सौ योजन

ऊपर कायम स्वरूपी रहता है, जमीन को छूता नहीं; उसीप्रकार आत्मा ज्ञान-दर्शन का पिण्ड है, वह कर्म से भिन्न, अलग जुदा ही है।

अनंत काल व्यतीत हुआ, किन्तु इनके प्रवाह में मेरा कभी नाश नहीं हुआ ह्न ऐसा धर्मी मानता है। मेरा त्रिकाली स्वरूप तो पवित्र और निरुपम है, इसे छोड़कर कालद्रव्य के साथ मेरा कारण-कार्य नहीं है। आत्मा का स्वरूप समझकर अनंत काल में अनंत जीव मुक्ति गये हैं। काल के साथ आत्मा का कोई संबंध नहीं है।

पर शास्त्र में काललब्धि की बात भी तो आती है ?

काललब्धि तो स्व पुरुषार्थ की प्राप्ति को कहते हैं। आत्मा स्व का भान करें, उसे स्वकाललब्धि कहते हैं। आत्मा कौन है ? इसके भान बिना कितने काल में मुक्ति होगी, यह प्रश्न ही नहीं रहता।

यहाँ कोई प्रश्न करे ह्न स्वभाव का भान जिसे हो, उसे कब मुक्ति होगी?

उससे कहते हैं कि स्वभाव की स्थिरता करे इतनी बात है। आत्मा कौन? पर कौन? विकारी कौन? निर्विकारी कौन? आदि को जाने बिना कितने काल में मुक्ति होगी ह्न यह पूछनेवाला पात्र जीव नहीं है। किन्तु मैं ज्ञायक हूँ, विकार मुझे शरणभूत नहीं है, पंचपरमेष्ठी भी मुझे शरणभूत नहीं है, मैं निरुपम तत्त्व हूँ ह्न जो ऐसी प्रतीति करे, उसे चारित्र की पूर्णता में कितना काल लगेगा ? ऐसा प्रश्न करे तो कहते हैं कि अल्पकाल में मुक्ति होगी। ज्ञानी जानता है कि काल मुझे फल नहीं देता, काल के कारण मुझे लाभ-नुकसान नहीं है।

यह आत्मा अनादि से काललब्धि के आश्रय से पर्याय में मंदी का व्यापार कर रहा है, उससे आत्मा को लाभ नहीं होता; किन्तु आत्मा निरुपम तत्त्व है, उसे काल से कोई फल नहीं ह्न ऐसा माने तो उसके फल में मुक्ति की प्राप्ति होती है। •

पाठशाला पुर्नजीवित

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन परिसर में डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया, मुम्बई की प्रेरणा एवं उन्हीं की अध्यक्षता में बहुत समय पूर्व बंद हुई वीतराग-विज्ञान महिला पाठशाला श्रीमती कमलाजी भारिल्ल द्वारा पुन: प्रारंभ की गई, जो कि प्रतिदिन रात्रि में 6:30 से 7:30 तक संचालित की जा रही है।

उक्त पाठशाला में भगवान महावीर जयंती के अवसर पर महिला सभा का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्रीमती कमलाजी भारिल्ल ने की, सभा में अनेक महिलाओं ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये। संचालन श्रीमती वर्षा जैन ने किया। **ह्न सुशीला जैन**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : जो शास्त्रों का जानकार है, वह तो मुक्ति पायेगा ही ?

उत्तर : जो जीव आत्मज्ञान से शून्य है, वीतराग ज्ञान रहित है; उस जीव को बाह्य पदार्थों से कुछ भी सिद्धि नहीं होती, उसका शास्त्रज्ञान भी किसी काम का नहीं। स्वसंवेदन ज्ञान से रहित व्रत-तप आदि जीव को दु:ख के ही कारण होते हैं। आनन्द सहित ज्ञान ही निज आत्मज्ञान है और वही ज्ञान वर्तमान सुख का कारण है, मोक्षसिद्धि का कारण है। शास्त्रज्ञान, व्रत-तप आदि के जो शुभ विकल्प हैं; वे सभी उसी क्षण-तत्काल दु:खरूप हैं और भावी दु:ख के कारण हैं तथा स्वसंवेदन ज्ञान तो वर्तमान सुखरूप है और भावी सुख का भी कारण है; इसलिए समस्त महिमा स्वसंवेदन ज्ञान की ही है।

प्रश्न : शास्त्र द्वारा आत्मा का ज्ञान होता है या नहीं?

उत्तर : शास्त्र द्वारा आत्मा का ज्ञान नहीं होता। दिव्यध्वनि से भी आत्मा जानने में नहीं आता - ऐसा परमात्मप्रकाश में कहा है ! आत्मा तो जब अपने से ही अपने द्वारा जानने में आता है, तब शास्त्र को निमित्त कहा जाता है। प्रवचनसार में आता है कि आत्मा के लक्ष्य से शास्त्राभ्यास करो; वहाँ तो निमित्त बतलाया है। शास्त्रपठन का गुण भिन्नवस्तुभूत आत्मा का ज्ञान करना है। ज्ञानमय आत्मा का अनुभव करना ही शास्त्रपठन का गुण है, अज्ञानी उसे तो जानता नहीं और मात्र शास्त्र पढता है; परन्तु निज परमात्मा को जाने बिना कर्मबन्धन से छुटकारा मिलनेवाला नहीं। दया, दान, पूजा, व्रत, तप आदि शुभराग तो दूर रहो; किन्तु यहाँ तो कहते हैं कि अकेले शास्त्र-पठन में ही रुक गया और सब कण्ठस्थ कर डाला तो इससे भी क्या लाभ हुआ ?

प्रश्न : शास्त्र पढने से आत्मा की सन्मुखता तो कही जाती है न?

उत्तर : आत्मा में जाने का प्रयत्न करे तो आत्मा की सन्मुखता कही जाये। यदि मात्र शास्त्र के ज्ञान में ही रुका रहे और अन्तर निर्विकल्प स्वभाव में जाने का प्रयत्न न करे, तब तो वह आत्मसन्मुख भी नहीं कहा जा सकता।

प्रश्न : एक तरफ तो कहते हो कि शास्त्र पढना चाहिए और दूसरी तरफ कहते

हो कि शास्त्र पढने में रुक जाये तो भी आत्मा जानने में नहीं आता-ऐसा क्यों ?

उत्तर : जो जीव व्यापार आदि के अशुभभाव में ही रुक गये हैं और आत्मज्ञान होने में निमित्त ह्न ऐसे शास्त्राभ्यास का भी जिनको समय नहीं, उनसे कहते हैं कि हे भाई ! तू शास्त्र-अभ्यास कर ! किन्तु जो जीव शास्त्राभ्यास करता हुआ भी मात्र उसी में रुक जाये और आत्मा के सन्मुख होने का प्रयत्न न करे तो उससे कहते हैं कि हे भाई ! शास्त्र-पठन का गुण तो अन्तर्मुख होकर अनुभव करना है, उस निर्विकल्प अनुभव का प्रयत्न नहीं करते तो तुम्हारा वह शास्त्र-पठन किस काम का? क्योंकि पढने का हेतु -प्रयोजन तो आत्मज्ञान प्रगट करना ही है। शास्त्र-वाँचने और शास्त्र-श्रवण में द्रव्य-सन्मुख होने की जोरदार बात पढते और सुनते ही उसकी धुन चढ जाना चाहिए, वह न हो तो सब श्रम व्यर्थ है।

प्रश्न : शास्त्र द्वारा आत्मा को जाना और बाद में परिणाम आत्मा में मग्न हुए- इन दोनों में आत्मा के जानने में क्या अंतर है?

उत्तर : अनन्तगुणा अन्तर है। शास्त्र से जानपना किया-यह तो साधारण धारणारूप जानपना है और आत्मा में मग्न होकर अनुभव से जानना-यह प्रत्यक्ष वेदन से जानपना है; अत: इनमें भारी अन्तर है।

प्रश्न : समयसार जैसे महान अध्यात्मशास्त्र को पढ-सुनकर भी लोग आगे क्यों नहीं बढते?

उत्तर : क्रियाकाण्ड की दृष्टिवाले को ऐसा लगता हैं कि अमुक व्यक्ति समयसार सुनता है, फिर भी आगे नहीं बढता। कुछ बाह्य त्याग, तप, व्रतादिक क्रियायें करे तो ही उसे आगे बढा हुआ दिखता है; किन्तु भाई ! समयसार का पठन, मनन, श्रवण करके परद्रव्य की भिन्नता, परद्रव्य का अकर्त्तृत्व, रागादि भावों में हेयबुद्धि और अन्तर में विराजित परमात्मशक्ति का उपादेयपना निरन्तर उसकी श्रद्धा-ज्ञान में चल रहा है और उससे पर्याय में जो सुधार हुआ है, वह क्या आगे बढना नहीं है ? अन्दर में श्रद्धा-ज्ञान में सत्य के संस्कार किये बिना जो त्याग - व्रतादि किया जाता है, उसके सम्बन्ध में आत्मानुशासनकार श्री गुणभद्राचार्य तो कहते हैं कि आत्मभान रहित अज्ञानी के जो भी बाह्य तपादि हैं, वे सब बालतप है। अन्तरंग मिथ्यात्व के त्याग बिना बाह्य त्याग को सच्चा त्याग नहीं कहते। अन्दर में श्रद्धा-ज्ञान-स्वरूपाचरणचारित्र में जो सुधार होता है, वही सच्चा सुधार है और वही आगे बढना है; परन्तु बाह्यदृष्टिवन्त को वह दृष्टिगोचर नहीं होता।

समाचार दर्शन ह्न

ऐतिहासिक नगरी हस्तिनापुर में ह्न

ऐतिहासिक पंचकल्याणक महोत्सव

हस्तिनापुर (मेरठ) : यहाँ शान्तिवन (प्रथम नसियाँजी) में नवनिर्मित श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर एवं कलात्मक मानस्तम्भ में विराजमान होने वाले जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा हेतु गुरुवार, दिनाँक 23 अप्रैल से बुधवार, 29 अप्रैल 2009 तक श्रीमज्जिनेन्द्र जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन कैलाश पर्वत रचना के सामने स्थित विशाल मोती धनुष मंडप (हस्तिनापुरी) में आचार्य श्री धर्मभूषणजी महाराज के ससंघ सानिध्य में अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस महोत्सव के विधिनायक 1008 श्री शान्तिनाथ भगवान थे।

महोत्सव में प्रतिदिन मुनिसंघ के समय-समय पर हुए प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा पर प्रासंगिक मार्मिक व्याख्यानों को सुनकर समाज इतनी प्रभावित हुई कि अनेक नगरों के लोगों ने भावना व्यक्त की है कि वे अपने पंचकल्याणकों में डॉ. भारिल्ल साहब को अवश्य आमंत्रित करेंगे। आपके अतिरिक्त ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के भी मोक्षमार्गप्रकाशक पर हुए प्रवचनों को सराहा गया। साथ ही पण्डित प्रद्युम्नजी जैन मुजफ्फरनगर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, व पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली आदि के भी प्रवचन हुए।

पंचकल्याणक की समस्त प्रतिष्ठा विधि दिगम्बर जैन समाज के सर्वमान्य, उच्चकोटि के सुप्रतिष्ठित विद्वान स्व.पण्डित श्री नाथूलाल जी संहितासूरी (इन्दौर) के परम शिष्य पण्डित रमेशचन्दजी बांझल ने शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न कराई।

प्रतिष्ठाचार्य पण्डित श्री ब्र. अभिनन्दकुमारजी भी जन्म कल्याणक के दिन आ गये थे और प्रतिष्ठाकार्यो में सहयोग कर रहे थे। आहारदान के समय मुनिराज की प्रतिमा को अपने मस्तक पर धारण करने का काम उन्होंने ही किया था।

सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य के रूप में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित कमलेशजी शास्त्री हस्तिनापुर, पण्डित विजयजी जैन हस्तिनापुर थे।

साथ ही श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित पीयूष शास्त्री, पण्डित सोनू शास्त्री खतौली, पण्डित मनीष सिद्धान्त नागपुर, पण्डित निकलंक शास्त्री कोटा, पण्डित निखिल शास्त्री कोतमा, एवं वर्तमान छात्र पण्डित विवेक शास्त्री दलपतपुर, पण्डित विकास शास्त्री इन्दौर, पण्डित एकत्व शास्त्री ,खनियाधाना, पण्डित वीरेन्द्र शास्त्री बक्स्वाहा, पण्डित विक्रांत शास्त्री एवं पण्डित आशीष शास्त्री भगवाँ आदि सभी का सराहनीय सहयोग रहा।

प्रतिदिन इन्द्रसभा-राज्यसभा एवं विविध ज्ञानवर्धक आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने सभी का मन मोह लिया। इन्द्रसभा, राजसभा एवं प्रासंगिक सभी कार्यक्रमों का सफल संचालन

पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने किया। आयोजन में श्री सीमंधर संगीत सरिता छिन्दवाड़ा के मधुर प्रासंगिक गीतों ने चार चाँद लगा दिये। जन्मकल्याणक के दिन रात्रि में पालना झूलन हेतु मैनपुरी (उ.प्र.) से आया काँच से निर्मित 54 फीट का विशाल विश्वप्रसिद्ध पालना उपस्थित जन समुदाय के आकर्षण का केन्द्र रहा।

इस मांगलिक प्रसंग पर सम्पूर्ण देश से पधारे हुए श्रेष्ठी वर्गों में दिल्ली से आत्मार्थी ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री अजितप्रसादजी जैन, श्री पृथ्वीचंदजी जैन, श्री आदीशजी जैन, परमसंरक्षक श्री त्रिलोकचंदजी जैन भारतनगर, संरक्षक श्री जयपालजी जैन दरीबा, पण्डित राकेश शास्त्री लोनी, मंगलसेनजी जैन विश्वासनगर; परमसहायक श्री श्रीरामजी जैन डिप्टीगंज, विदिशा (म.प्र.) से पण्डित शिखरचंदजी जैन, मैनपुरी (उ.प्र.) से पण्डित प्रकाशचंदजी ज्योतिषाचार्य, भिण्ड (म.प्र.) से श्री सुरेशचंदजी जैन, खतौली (उ.प्र.) से श्री नरेंद्रकुमारजी सर्राफ, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) से श्री मनोजकुमारजी जैन, खेकडा (उ.प्र.) से ब्र. विनोद जेन, ऋषिकेश (हरिद्वार) से त्रसपालजी जैन आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। साथ ही बागपत, गाजियाबाद, शामली, सहारनपुर, सरधना, खतौली, मेरठ, बडौत, कांधला, खेकडा, महलका, भोगाँव, जसवंतनगर आदि अनेक नगरों से भी सैकडो मुमुक्षु भाई पधारे।

मंगलायतन अलीगढ से श्री पवनकुमारजी भी आ गये थे। उन्होंने डॉ. भारिल्ल के प्रवचन के पूर्व सभा में दिसम्बर 10 में मंगलायतन विश्वविद्यालय में होनेवाले पंचकल्याणक के लिए सभी को आमंत्रित किया।

पंचकल्याणक के अंतिम दिन शांति यज्ञ के अवसर पर साहित्य की कीमत कम करने के लिए 56000 रुपये की राशि प्राप्त हुई। आयोजन में लगभग 95000 रुपये का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा। 20,648 घंटे की डी.वी.डी. और 2000 घण्टे की सी.डी. भी घर-घर पहुँची।

महोत्सव में लगभग 8-10 हजार साधर्मियों ने पधारकर धर्मलाभ लिया। जिनमें करीब 3 हजार मुमुक्षु समाज भी सम्मिलित रही। **ह्न नवनीत जैन, मुख्य संयोजक**

अद्भुत तरीके से जन्म जयंती

Mumukshus Of North America (MONA) द्वारा आयोजित पूज्य गुरुदेवश्री की 120वीं जन्मजयंती भारत, लंदन, कनाड़ा और अमेरिका के मुमुक्षुओं ने 80 टेलिफोनों से जुड़कर मनायी। विद्वान राजुभाईजी कामदार राजकोट, सौरभजी शास्त्री इन्दौर और अल्पनाजी भारिल्ल मुंबई ने तथा अमेरिका में कार्यरत विविध संस्थानों, लंदन के मुमुक्षुओं और वेबसाइट ह्न **atmadharma.com** के प्रतिनिधियों ने पूज्य गुरुदेवश्री को भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की।

अमेरिका में टेलीफोन द्वारा संचालित आध्यात्मिक शिक्षण वर्गों की जानकारी के लिये संपर्क करें ह्न **webmaster@jainism.us** **ह्न रजनीभाई गोसलिया**

ब्र. यशपालजी जैन द्वारा धर्मप्रभावना

1. रतलाम (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 8 से 17 अप्रैल, 09 तक जयपुर से पधारे ब्र.यशपालजी जैन द्वारा 10 दिनों तक धर्मप्रभावना हुई। आपने कर्म की बंध, सत्ता आदि दस अवस्थाओं और प्रारंभ के दो गुणस्थानों का अध्ययन कराया। आपके व्याख्यानों में लगभग 100 से अधिक श्रोता रहते थे। और सभी श्रोता बहुत ही उत्साहित थे। अंतिम दिन 44 लोगों ने परीक्षा भी दी। परिणाम शत-प्रतिशत रहा, जिसमें अधिकांश परीक्षार्थियों ने विशेष योग्यता प्राप्त की।

2. कोलारस(म.प्र.) : यहाँ दिनांक 19 से 27 अप्रैल, 09 तक ब्र.यशपालजी जैन द्वारा तीन मंदिरों में प्रवचन हुए। सुबह का प्रवचन पंचायती मंदिर में गुणस्थान विषय पर होता था। रात्रि का प्रवचन ए.बी. रोड़ स्थित आदिनाथ जिनमंदिर में होता था। आपके द्वारा एक प्रवचन चंद्रप्रभ मंदिर में भी हुआ। दिनांक 26 अप्रैल को स्वामीजी की जन्मजयंती के अवसर पर ए.बी. रोड़ स्थित आदिनाथ जिनमंदिर में पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन हुआ। विधान के मध्य पंचपरमेष्ठी के स्वरूप पर आपका व्याख्यान हुआ। अन्य दिनों में आदिनाथ जिनमंदिर में कर्म की दस अवस्थाओं की कक्षा चली। स्वामीजी के जन्मदिन के अवसर पर बड़े मंदिर में आयोजित सभा में अनेक श्रोताओं ने उनके उपकार का बहुमान पूर्वक उल्लेख किया।

कल्पद्रुम मण्डल विधान सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनाँक 1 मई से 5 मई, 09 तक श्रीमती तेजप्रभा धर्मपत्नी स्व.श्री उम्मेदमलजी बड़जात्या के सुपुत्र श्री नरेन्द्र-कल्पनाजी बड़जात्या की ओर से श्री कल्पद्रुम मंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: नित्य-नियम पूजन व विधान के उपरान्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के णमोकार महामंत्र : एक अनुशीलन विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। प्रवचनोपरान्त पण्डित संजीवकुमारजी गोधा की समवसरण रचना विषय पर प्रतिदिन कक्षा चली।

दोपहर में बालबोध पाठमाला की कक्षा के उपरान्त पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने मोक्षमार्गप्रकाशक के माध्यम से अरहंत का स्वरूप तथा ब्र. यशपालजी ने जिनधर्म प्रवेशिका पर कक्षा ली। सायं जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् प्रतिदिन दो प्रवचनों में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित मनीषजी शास्त्री एवं पण्डित परेशजी शास्त्री का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री ने पण्डित संदीप शास्त्री, पण्डित शशांक शास्त्री, पण्डित प्रशांत शास्त्री के सहयोग से सम्पन्न कराये।

कानजीस्वामी की जन्म जयंती

1. उदयपुर (चन्द्रप्रभ चैत्यालय) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में मुखर्जी चौक स्थित चंद्रप्रभ दिगम्बर जैन चैत्यालय से कहानगुरु जुलूस निकाला गया। जुलूस में लगभग 700 मुमुक्षुओं द्वारा घोडे, बग्गी तथा बैण्ड-बाजों सहित शहर के विविधि मार्गो से गुजरकर धर्मप्रभावना की गई।

इस प्रसंग पर चैत्यालय प्रांगण में श्री रूपलालजी गंगावत परिवार की ओर से शांतिविधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम सचिन शास्त्री ने सम्पन्न कराये।

मंदिर के अध्यक्ष श्री हीरालालजी अखावत ने बताया कि सायंकाल कानजीस्वामी के जीवन चरित्र पर व्याख्यानमाला आयोजित की गई। इस अवसर पर मुख्य वक्ता डॉ. ममता जैन बाँसवाड़ा के अतिरिक्त पण्डित खेमचंदजी जैन, श्री कन्हैयालालजी दलावत, पण्डित आगम जैन, पण्डित सुजानमलजी गदिया, पं. भोगीलालजी भदावत आदि ने भी कानजीस्वामी के जीवनदर्शन पर अपने विचार व्यक्त किये। **ह्र जिनेन्द्र शास्त्री**

2. उदयपुर (सैक्टर-11) : गुरुदेवश्री की जन्मजयंती पर अखिल भारतीय जैन महिला फैडरेशन के तत्त्वावधान में सैक्टर 11 स्थित शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में रविवारीय वीतराग-विज्ञान पाठशाला के बच्चों को पण्डित खेमचंदजी जैन एवं श्रीमती नीलमजी जैन द्वारा पूजन प्रशिक्षण दिया गया। बच्चों ने धोती दुपट्टा पहनकर अष्टद्रव्यों द्वारा प्रायोगिक विधि से देव-शास्त्र-गुरु की पूजन सीखी।

पूजन प्रशिक्षण के पश्चात् आयोजित सभा में फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्र शास्त्री का दैनिक जीवन में पूजन की उपयोगिता विषय पर विशेष वक्तव्य हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित भोगीलालजी भदावत ने की विशिष्ट अतिथि श्री कचरूलालजी मेहता थे।

ह्र आशा सिंघवी, संयोजिका-महिला फैडरेशन

शोक समाचार

1) **मियामी (यू. एस. ए)** निवासी श्री महेंद्रभाई शाह की धर्मपत्नी रंजनबेन शाह का दिनांक 1 मई 2009 को देहावसान हो गया है। वे एक तत्त्वरुचिवंत धार्मिक महिला थी। उनका पूरा परिवार धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत है। डॉ. भारिल्ल साहब प्रतिवर्ष उनके यहाँ एक सप्ताह के लिए जाते रहे हैं और इस वर्ष भी जायेंगे।

2) **भोपाल निवासी** पण्डित कस्तूरचन्दजी की धर्मपत्नी एवं प्रो. अजयजी जैन की माताजी **श्रीमती कमलाबाई जैन** का दिनांक 9 अप्रैल, 09 को प्रात: 7 बजे आकस्मिक निधन हो गया। आपमें तत्त्वचर्चा एवं स्वाध्याय की विशेष लगन थी, आपने कई बार गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का सान्निध्य भी प्राप्त किया था। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक को 500/- रुपये प्राप्त हुए हैं।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्र यही मंगल भावना है।

डॉ. भारिल्ल के साहित्य पर सेमिनार

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल स्मारक भवन में चलने वाले कल्पद्रुम मंडल विधान के अवसर पर दिनांक 3 मई 2009, रविवार को **जैन अध्यात्म को डॉ. भारिल्ल का साहित्यिक अवदान** विषय पर संगोष्ठी रखी गई, जिसकी अध्यक्षता पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने की। मुख्य वक्ता के रूप में पण्डित संजयजी शहा गनोड़ा एवं डॉ. पारसमलजी उदयपुर थे।

पण्डित संजयजी शहा, गनोडा ने अपना शोध निबंध डॉ. साहब की अमर कृति धर्म के दशलक्षण पर प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि 20 वीं शताब्दी में आध्यात्मिक युग के प्रणेता आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी द्वारा प्रसारित तत्त्वज्ञान को आज 21 वीं शताब्दी में भी जन-जन तक सरस-सरल और सुबोध शैली में पहुँचाने का सफल प्रयास करने वाले यदि किसी एक मनीषी का नाम लिया जावे तो वह हैं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, जिन्होंने अपनी वाणी व लेखनी से आध्यात्मिक गूढ रहस्यों को भी अपने प्रखर चिंतन व सरल शैली द्वारा सुगम बना दिया हैं।

डॉ. पारसमलजी ने अपना शोध निबंध समयसार अनुशीलन पर प्रस्तुत करते हुए समापन में कहा कि डॉ. भारिल्ल का साहित्यिक योगदान की बात करना बहुत छोटी बात हैं। ये तो छोटे साहित्यकारों की बातें हैं, जिनके लाखों श्रोता पूरी दुनिया में हैं, जिनकी 40-42 लाख से ज्यादा किताबें बिक चुकी हैं, जिनके 10 हजार से ज्यादा पृष्ठ प्रकाशित हो चुके हैं, जिनके सैकड़ों शिष्य पूरी दुनिया में तत्त्व का प्रचार कर रहे हैं; वे किसी साहित्यकार के हाथ में नहीं हैं, दार्शनिक के हाथ में नहीं हैं; इनकी चर्चा तो इतिहास करेगा। आगामी अनेक वर्षों तक जैन इतिहास में आपका नाम मुख पृष्ठ की प्रथम पंक्ति में बना रहेगा। उनका वास्तविक व्यक्तित्व देखने के लिए लाखों परिवारों में उनका प्रभाव देखा जा सकता है। डॉ. भारिल्ल की बात करने में ही हमको प्रेरणा मिलती है।

विद्वत्परिषद का राष्ट्रीय अधिवेशन

हस्तिनापुर : यहाँ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर शुक्रवार, दिनाँक 24 अप्रैल 09 को श्री अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत्परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन आचार्यश्री धर्मभूषणजी महाराज के आशीर्वाद से उनके शिष्य आचार्यकल्प भारतभूषणजी मुनिराज के ससंघ सान्निध्य में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में सानन्द सम्पन्न हुआ।

परिषद् के मंत्री डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल ने परिषद् व उसकी गतिविधियों की जानकारी दी। अधिवेशन को डॉ. भारिल्ल एवं प्रतिष्ठाचार्य पण्डित रमेशचन्दजी बांझल, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटिल, पण्डित शिखरचन्दजी जैन विदिशा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री आदि विद्वानों ने सम्बोधित किया।

अंत में आचार्यकल्प भारतभूषणजी ने विद्वत्परिषद् के कार्यक्रमों की सराहना की और संस्था को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन श्री अखिलजी बंसल ने एवं मंगलाचरण पण्डित सरमनलालजी दिवाकर ने किया।

पत्र सम्पादक संघ का अधिवेशन सम्पन्न

हस्तिनापुर : यहाँ दिनाँक 25 अप्रैल 09 को अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ का द्वितीय राष्ट्रीय अधिवेशन आचार्यश्री धर्मभूषणजी मुनिराज के आशीर्वाद से उनके शिष्य आचार्यकल्प भारतभूषणजी मुनिराज के ससंघ सान्निध्य में दि. जैन महासमिति के कार्याध्यक्ष श्री हुकमचन्द शाह बजाज इन्दौर के मुख्य आतिथ्य एवं डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, डॉ. रमेशजी जैन निवाई, श्री रमेशजी तिजारिया तथा श्री राजेन्द्रजी ठोलिया के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता संघ के अध्यक्ष रवीन्द्र मालव सम्पादक वीर ने की तथा संचालन संघ के महामंत्री अखिल बंसल ने किया। कार्यक्रम का शुभारंभ जैन संदेश की सहसम्पादिका डॉ.ज्योति जैन के मंगलाचरण से हुआ।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि पत्र सम्पादक संघ के रूप में आज एक बहुत बड़ी शक्ति का उदय हो गया है। इन पत्रकारों की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है कि वे देश और समाज को कहां ले जाना चाहते हैं। जैन समाज में विभिन्न मंच हैं, जिन्हें संगठित करने का महान कार्य इस सम्पादक संघ के माध्यम से किया जा रहा है। पत्रकार अपनी गंभीरता को रखते हुए दायित्व का निर्वहन करें। जैन तत्त्वज्ञान को जिन्दा रखने व सामाजिक शांति के लिए इसकी महती आवश्यकता है। सभी पत्रकार महावीर के सिद्धान्तों व अहिंसा के प्रचार-प्रसार हेतु अपने मतभेद के मुद्दों को गौण करें तो देश व समाज का हित होगा।

इस अवसर पर श्री हुकमचन्द शाह बजाज, डॉ. रमेशचन्दजी निवाई, श्री राजेन्द्रजी ठोलिया, श्री रमेशजी तिजारिया, श्री रवीन्द्र मालव, श्री अखिल बंसल, श्री नवनीत जैन तथा ज्योति जैन आदि पत्रकारों ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

आचार्यकल्प भारतभूषणजी ने वर्तमान समय में पत्रकारों की महती भूमिका की चर्चा करते हुए उन्हें समाज हित में कार्य करने की प्रेरणा दी।

डॉ. भारिल्ल पर एम.एड.स्तरीय शोधकार्य

माननीय डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के शिक्षाशास्त्रीय व्यक्तित्व को उभारते हुए राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध वसुन्धरा (महिला शिक्षक प्रशिक्षण) महाविद्यालय जयपुर के प्राचार्य डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी जैन के निर्देशन में श्रीमती नीतू चौधरी ने **शिक्षाशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के दर्शन का शैक्षिक अध्ययन** विषय पर अपना लघुशोध प्रबन्ध 4 मई 2009 को प्रस्तुत किया है।

श्रीमती नीतू चौधरी द्वारा डॉ. जैन के निर्देशन में किये गये इस शोधग्रन्थ में डॉ. भारिल्ल की शिक्षाशास्त्रीय गतिविधियों, मान्यताओं एवं शैक्षिक विचारों का अन्वेषणात्मक अध्ययन करते हुए शिक्षाशास्त्र के अष्टविध अंगों का सविशद विवेचन भी किया गया है। अन्त में सारांश एवं भावी शोध संभावनाएँ भी व्यक्त की गई हैं।

उच्च शिक्षा में इस मौलिक एवं शोधपूर्ण कृत्य के लिए जैनपथप्रदर्शक परिवार डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी जैन एवं शोधकर्त्री श्रीमती नीतू चौधरी का हार्दिक अभिनन्दन करता है।

इन्द्रध्वज महामण्डल विधान सम्पन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट एवं श्री मारवाड़ी मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री मारवाड़ी मंदिर में दिनांक 26 अप्रैल से 3 मई तक इन्द्रध्वज महामण्डल विधान सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर दो दिन अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के **ध्यान का स्वरूप** विषय पर विशेष प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतिदिन प्रात: नित्य नियम पूजन-विधान के मध्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुए। दोपहर में श्रीमती कमलाजी भारिल्ल जयपुर द्वारा प्रौढ कक्षा ली गई तथा पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा और पण्डित कोमलचंदजी टडा (द्रोणगिरी) द्वारा मार्मिक प्रवचन हुये। सायं जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् दो प्रवचनों के माध्यम से पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट और पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई का भी लाभ मिला। विधान के अन्तिम दिन ढाई द्वीप जिनायतन हेतु प्रतिष्ठेय प्रतिमाओं की विशाल शोभायात्रा निकाली गई।

विधि-विधान के समस्त कार्य श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित सन्मतिजी शास्त्री पिडावा, पण्डित संदीपजी शास्त्री बडकुल, पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा के सहयोग से सम्पन्न हुए।

पंचकल्याणक वार्षिकोत्सव सानन्द सम्पन्न

कोटा (राज.) : यहाँ इन्द्राविहार स्थित सीमंधर जिनालय के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के वार्षिकोत्सव पर त्रिदिवसीय विधान का आयोजन दिनांक 8 से 10 मई 2009 तक किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: नित्य-नियम पूजनोपरान्त पंचमेरु नन्दीश्वर मण्डल विधान का आयोजन हुआ। विधान के मध्य पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रासंगिक विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में आपके द्वारा शंका-समाधान एवं रात्रि में विविध विषयों पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

विधि-विधान के समस्त कार्य विधानाचार्य पण्डित निखिलजी शास्त्री कोतमा, पण्डित संदीपजी शास्त्री बड़कुल एवं स्थानीय श्री महेन्द्रजी लुहाडिया ने सम्पन्न कराये। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

सभी कार्यक्रम श्री ज्ञानचन्दजी जैन के निर्देशन एवं पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री के संचालन में सम्पन्न हुये।

श्री प्रेमचन्दजी बजाज को प्रभावना शिरोमणि

चंवलेश्वर (भीलवाड़ा) : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन कोटा संभाग की ओर से ने महावीर जयंती की पूर्व संध्या पर दिनांक 5 अप्रैल, 09 को मेवाड़ की सुरम्य पहाड़ियों के मध्य स्थित अतिशय क्षेत्र चंवलेश्वर पार्श्वनाथ में एक विशाल अधिवेशन का आयोजन रखा गया, जिसमें लगभग 1000 युवा फैडरेशन के लोगों ने भाग लिया।

कार्यक्रम प्रात:काल नित्य नियम पूजन-विधान से प्रारम्भ हुआ। दोपहर में पण्डित संजयजी हरसोरा रावतभाटा एवं पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर के मांगलिक प्रवचन हुये।

इस प्रसंग पर अ. भा. दि. जैन युवा फैडरेशन कोटा संभाग ने मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा, कुन्दकुन्द कहान छात्रावास एवं आचार्य धरसेन सिद्धान्त महाविद्यालय के संस्थापक **श्री प्रेमचंदजी बजाज** को **प्रभावना शिरोमणि** की उपाधि से सम्मानित किया। इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री तिलकजी चौधरी किशनगढ़ ने की।

सभा में जीवेश जैन, अखिलेश जैन, कु.अक्षता जैन, पण्डित विजयजी शास्त्री, पण्डित जयकुमारजी, श्री विनोदजी सेठिया, श्री तेजमलजी पटवारी, श्री मदनलालजी एडवोकेट आदि अनेक लोगों ने अपने विचार प्रगट किये। मंगलाचरण समकित मोदी ने किया।

इसी प्रसंग पर **भगवान महावीर के सिद्धान्त : आधुनिक संदर्भ में** विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में पण्डित जयकुमारजी, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री, पण्डित विनयजी शास्त्री, पण्डित धर्मचंदजी, पण्डित सुनीलकुमारजी आदि ने अपने विचार प्रगट किये।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन पण्डित रतनजी चौधरी ने किया। आयोजन में लगभग 20-25 नगरों से साधर्मी पधारे।

ह्न तेजमल पटवारी, कोटा संभाग प्रभारी

(आगामी कार्यक्रम...)

जैन सिद्धान्त शिविर

नवागड (महा.) : यहाँ दिनांक 3 जून से 7 जून 2009 तक तीर्थक्षेत्र कमेटी की तरफ से पहली बार आयोजित इस शिविर में **पण्डित दिनेशभाई शहा, मुंबई** प्रतिदिन छह घण्टे जैन सिद्धान्तों का सरलता से ज्ञान करायेंगे। इच्छुक शिविरार्थी अपने आने की सूचना निम्न लिखित पतों पर अवश्य देवें। नवागड क्षेत्र परभणी रेल्वे स्टेशन से 20 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

१) **श्री माणिकचंद सूरजमल विनायके**
'अहिंसा' मु/पो - सेलू,
जिला - परभणी 431503 (महा.)
मो. नं. 09422192290

2) **पण्डित दिनेशभाई शहा,**
157/9, निर्मला निवास, सायन (पू.)
मुंबई 400022
फोन ह्न 022-24073581